रूसी उपकरणों पर भारतीय सैन्य निर्भरता

drishtiias.com/hindi/printpdf/indian-military-dependence-on-russian-equipments

प्रिलिम्स के लिये:

विभिन्न भारतीय सैन्य उपकरण, CAATSA, SIPRI, ब्रह्मोस, सैन्य अभ्यास इंद्र

मेन्स के लिये:

भारत द्वारा विभिन्न देशों से आयात किये जाने वाले सैन्य उपकरण की स्थिति, भारत-रूस रक्षा संबंध

चर्चा में क्यों?

मिलिट्री बैलेंस 2021 (Military Balance 2021) के अनुसार, भारत के वर्तमान सैन्य शस्त्रागार में **रूस-निर्मित या रूसी-तकनीक पर डिज़ाइन** किये गए उपकरणों की भारी मात्रा है।

> मिलिट्री बैलेंस दुनिया भर के 171 देशों की सैन्य क्षमताओं और रक्षा अर्थशास्त्र का **मूल्यांकन प्रतिवर्ष इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्ट्रैटेजिक स्टडीज (वैश्विक थिंक टैंक) द्वारा किया जाता** है।

प्रमुख बिंदु

- **रिपोर्ट के बारे में:**
  - रूसी हथियारों और उपकरणों पर भारत की निर्भरता में काफी गिरावट आई है।
    - हालाँकि **भारतीय सेना रूसी आपूर्ति वाले उपकरणों के बिना प्रभावी ढंग से काम नहीं** कर सकती और निकट भविष्य में भारत-रूस के मध्य शर्तों के आधार पर हथियार प्रणालियों पर भारत की निर्भरता बनी रहेगी।
  - CAATSA रूस से सैन्य हथियार खरीदने वाले देश के खिलाफ प्रतिबंध लगाने का प्रयास करता है।
    - भारत की **रूस निर्मित S-400 वायु रक्षा प्रणाली** खरीदने की योजना है, जो **CAATSA की धारा 231 के तहत अमेरिकी प्रतिबंधों को प्रभावित** कर सकती है।
    - अमेरिकी प्रशासन की **काउंटरिंग अमेरिकाज़ एडवर्सरीज़ थ्रू सेंक्शंस एक्ट (CAATSA)** की समीक्षा की दृष्टि से यह रिपोर्ट महत्त्वपूर्ण है।

- **भारत-रूस सैन्य संबंध:**
    - **भारतीय निर्भरता: स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI)** के अनुसार, वर्ष 2010 से रूस सभी भारतीय हथियारों के आयात में लगभग दो-तिहाई (62%) योगदान करता है।

        इसके अतिरिक्त भारत सबसे बड़ा रूसी हथियार आयातक रहा है, जो सभी रूसी हथियारों के निर्यात का लगभग एक-तिहाई (32%) है।
    - **भारत के लिये अनुकूल रूसी सैन्य निर्यात:** भारत में रूस का अधिकांश प्रभाव हथियार प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों को प्रदान करने की उसकी सम्मति के कारण है जिसे कोई अन्य देश भारत को निर्यात नहीं करेगा।
        - **अमेरिका केवल** C-130j सुपर हरक्यूलिस, C-13 ग्लोबमास्टर, **P-8i पोसाइडन** आदि जैसी **गैर-घातक रक्षा तकनीक प्रदान** करता है, जबकि रूस **ब्रह्मोस** सुपरसोनिक मिसाइल, **S-400 एंटी-मिसाइल सिस्टम** जैसी उच्च-स्तरीय तकनीक प्रदान करता है।
        - रूस भी अपेक्षाकृत आकर्षक दरों पर उ**न्नत हथियार प्लेटफॉर्म** की पेशकश करना जारी रखता है।
    - **सैन्य सहयोग: रूस से सैन्य हार्डवेयर के लगभग 10,000 उपकरण खरीदे जाते हैं।**
        - **भारतीय सेना का मुख्य युद्धक टैंक** बल मुख्य रूप से रूसी T-72M1 (66%) और T-90S (30%) से बना है।
        - भारत **मेक इन इंडिया** दृष्टिकोण के तहत **AK 103 राइफल्स** की कीमत पर बातचीत कर रहा है।
    - **नौसेना सहयोग:** भारतीय नौसेना का एकमात्र परिचालन विमान वाहक एक नवीनीकृत सोवियत युग का जहाज़ **(आईएनएस विक्रमादित्य)** है। नौसेना के लड़ाकू बेड़े में **43 MiG-29K** शामिल हैं।
        - नौसेना के **10 गाइडेड-मिसाइल विध्वंसक** में से चार **रूसी काशीन श्रेणी** के हैं और इसके 17 युद्धपोतों में से छह **रूसी तलवार श्रेणी** के हैं।
        - नौसेना की एकमात्र परमाणु-संचालित पनडुब्बी रूस द्वारा लीज़ पर दी गई है और सेवारत 14 अन्य पनडुब्बियों में से आठ **रूसी मूल की किलो (Kilo) श्रेणी** की हैं
    - **वायुसेना सहयोग:** भारतीय वायुसेना का 667-विमान फाइटर ग्राउंड अटैक (FGA) बेड़ा 71% रूसी मूल (39% Su-30s **(सुखोई),** 22% MiG-21s, 9% MiG-29s) है।

        सेवा के सभी छह एयर टैंकर **रूस निर्मित IL-78s** हैं।
    - **मिसाइल सहयोग:** देश की एकमात्र परमाणु-सक्षम सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइल, **ब्रह्मोस** रूस के साथ एक संयुक्त उद्यम द्वारा निर्मित है।

        S-400 एयर डिफेंस मिसाइल सिस्टम के 2021 तक डिलीवर होने की उम्मीद है।
    - **सैन्य अभ्यास:** भारत और रूस **सैन्य अभ्यास की इंद्र (INDRA)** शृंखला आयोजित करते हैं, जो वर्ष 2003 में शुरू हुई थी। हालाँकि पहला संयुक्त त्रि-सेवा अभ्यास वर्ष 2017 में आयोजित किया गया था।

आगे की राह

- **चीन और पाकिस्तान** के साथ रूस की नज़दीकियों ने भारत के लिये चिंता बढ़ा दी है। हालाँकि यह निकटता सामरिक है जो मुख्य रूप से पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण प्रेरित है, जबकि रूस-भारत साझेदारी रणनीतिक है।
    - ऐसा इसलिये है क्योंकि रूस ने हमेशा **भारत को चीन की बढ़ती प्रभुत्त्व** के खिलाफ एक **संतुलनकर्त्ता** के रूप में देखा।
- भारत अपनी खरीद का दायरा बढ़ा सकता है और अपने रणनीतिक कार्यक्रमों तथा **हथियार प्रणालियों के संयुक्त विकास के लिये रूस का सहयोगी बन** सकता है।
    - इस प्रकार **अमेरिका के साथ उसके द्वारा बनाए गए रणनीतिक संबंधों से हथियार आपूर्तिकर्त्ताओं** में भारत की रुचि को अलग करके आगे का मार्ग प्रशस्त करेगा।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस